

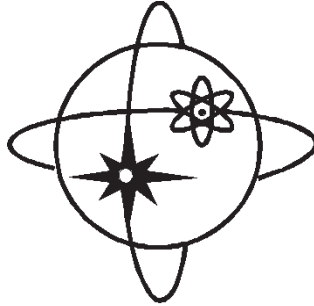


सर्वांगीण स्वास्थ्य - कर्मों की थैरॉपी

और

परमात्मा

विभिन्न थैरापियाँ, विभिन्न चिकित्सा पद्धतियाँ और सम्पूर्ण स्वास्थ्य



अटल सत्य

सतयुग में आत्मा सतोप्रधान स्थिति में सतोप्रधान प्रकृति के सतोप्रधान सुख भोगती है, उससे भी आत्मिक शक्ति और आत्मा का संगम पर जमा किया हुआ पुण्य का खाता घटता है, फिर द्वापर से जब आत्मा देहाभिमान के वश रजो-तमो स्थिति में आती है तो रजो-तमो प्रकृति का रजो-तमो सुख भोगती है और विषय-सुख में प्रवृत्त होती है तो आत्मिक शक्ति और जमा का खाता तीव्रता से घटता है। फिर जब आत्मा विकारों के वशीभूत प्रकृति के साधन-सम्पत्ति का दुरुपयोग करता है या अनावश्यक और अनाधिकृत रूप से उपभोग करता है, विकारों के वशीभूत आत्माओं से साथ दुर्व्यवहार करता है तो आत्मा पर पाप का बोझ चढ़ता है, जो आत्मा को दुखी-अशान्त बना देता है।

फिर जब कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर आत्मा को परमपिता परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है और आत्मा परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर संगमयुगी ईश्वरीय प्राप्तियों और अनुभूतियों में रमण करते हुए अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द के अनुभव में रहती है तो पापों का बोझ कम होता जाता है और उस स्थिति में आत्मा जो ईश्वरीय सेवा करती है, उससे पुण्य का खाता जमा होता जाता है, जिससे आत्मा सम्पन्नता और सम्पूर्णता को प्राप्त करती है। अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द के अनुभव की स्थिति में आत्मा से जो वृत्ति और वायब्रेशन पैदा होता है, उससे जड़-जंगम-चेतन प्रकृति पावन बनकर अपने सतोप्रधान सम्पन्न स्वरूप को प्राप्त करती है, जिससे आत्मा का पुण्य का खाता जमा होता है, जिसके आधार पर ही सतयुग-त्रेता में आत्मा को जड़-जंगम-चेतन प्रकृति से सुख प्राप्त होता है।

अभी हमारा परम कर्तव्य है कि हम प्रकृति प्रदत्त साधन-सम्पत्ति का कम से कम उपभोग करें अर्थात् उतना ही उपभोग करें, जिससे हमारी उपयोगिता या कार्य-क्षमता बढ़ती रहे अथवा स्थिर रहे और संगम पर परमात्मा से प्राप्त साधनों अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों और अनुभूतियों के द्वारा परम-शक्ति, परम-शान्ति, परमानन्द अनुभव करते रहें और सर्वात्माओं को कराते रहें।

परम गौरवमय

“अनादि स्वरूप में परमधाम में बाप के साथ-साथ चमकती हुई आत्मा हैं। बाप के साथ के कारण विशेष चमकती हुई दिखाई दे रही हैं।... सृष्टि-चक्र के आदि अर्थात् सतयुग आदि में अपना स्वरूप देखो, कितना श्रेष्ठ सुख स्वरूप है, कितना सर्व प्राप्ति स्वरूप है।... फिर नीचे आओ तो द्वापर में भी आपका स्वमान पूज्य का है अर्थात् पूज्य स्वरूप है। ... सभी कितनी भावना से कायदे प्रमाण पूजा करते हैं। ऐसे कायदे प्रमाण पूजा और किसी की भी नहीं होती है।... संगम पर स्वयं भगवान आपकी जीवन में पवित्रता की विशेषता भरता है, जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है। (फिर रिटर्न जर्नी अर्थात् फरिश्ता स्वरूप)”

अ.बापदादा 2.02.12

वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन परम गौरवमय (Graceful) है। अभी बाबा ने हमको हमारे तीनों कालों और तीनों लोकों के गौरवमय स्वरूपों की स्मृति दिलाई है। उन तीनों लोकों और तीनों कालों की यथार्थ अनुभूति अभी ही आत्मा को होती है और उन तीनों लोकों और तीनों कालों की गौरवमय स्थिति का आधार अभी संगमयुग के गौरवमय कर्तव्य ही हैं। जो आत्मा उन गौरवमय कर्तव्यों में तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा तत्पर रहती है, उसको उन गौरवमय स्थितियों का अनुभव अवश्य होता है।

प्रस्तावना

सर्वांगीण स्वास्थ्य अर्थात् सतोप्रधान स्थिति। सर्वांगीण स्वास्थ्य आत्मा की मूलभूत स्थिति है, जिसके लिए वैद्यराज परमपिता परमात्मा ने हमको सारा ज्ञान दिया है और उसका विधि-विधान भी बताया है। बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है, उसको मनन-चिन्तन कर, उसकी यथार्थ धारणा से अज्ञानता जो आत्मा की मूल बीमारी है, वह खत्म होती है और जो राजयोग सिखाया है, जिससे हम अपनी आत्मिक शक्ति का विकास करके, श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त होकर ही सर्वांगीण स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं।

बाबा ने हमको तन-मन-धन-जन के स्वास्थ्य का विधि-विधान बताया है। उसमें तन का स्वास्थ्य तो एक अंशमात्र है, जिसके लिए ही संसार की समस्त थेरापियाँ कार्य कर रही हैं, फिर भी विश्व में रोग-शोक बढ़ता ही जाता है। इस रोग-शोक का कारण हमारे विकर्मों का खाता है, जिसके लिए बाबा ने कर्मों की थेरापी सिखाई है। जो अपनी इस थेरापी पर निश्चय और विश्वास करके यथार्थ रीति पुरुषार्थ करता है, वही सर्वांगीण स्वास्थ्य की अनुभूति इस जीवन में कर सकता है। शारीरिक रोग के लिए भी अशरीरीपन का अभ्यास सबसे श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। कर्मों की थेरापी के विषय में बाबा ने मुरलियों में सारा ज्ञान दिया है और सब राज समझाये हैं।

“आज देखो रोगों के लिए कितने इलाज, कितनी दवाईयाँ आदि निकालते रहते हैं लेकिन रोगी तो फिर भी बढ़ते जा रहे हैं, इसलिए दुख-अशान्ति बढ़ती ही जा रही है।... अभी इन 5 विकारों को जीतना है क्योंकि यह धन भी अभी विकारी कर्म के हिसाब से होने के कारण उससे भी दुख होता है। शरीर भी विकारी खाते का होने के कारण, उसमें रोग, अकाले मृत्यु होती रहती है, जिससे दुख मिलता है।”

मातेश्वरी 24.04.65

सर्वांगीण स्वास्थ्य - कर्मों की थेरापी और परमात्मा

विषय सूची

विषय सूची

पेज नम्बर

सर्वांगीण स्वास्थ्य - कर्मों की थेरापी और परमात्मा	7
सर्वांगीण स्वास्थ्य और ईश्वरीय जीवन			
सर्वांगीण स्वास्थ्य, विश्व में प्रचलित विभिन्न थेरापियां और चिकित्सा पद्धतियाँ			
सर्वांगीण स्वास्थ्य और कर्मों की थेरापी 8
विभिन्न प्रकार के रोग, उनके कारण और निवारण			
दैहिक रोग अर्थात् कर्मभोग 9
मानसिक रोग			
आध्यात्मिक रोग			
सम्बन्धों के रोग अर्थात् कर्म-बन्धन 10
रोग और वर्तमान परिस्थितियाँ			
रोगों का निदान 12
सर्वांगीण स्वास्थ्य, ज्ञान-योग, कर्मों की थेरापी और परमात्मा			
Q. माया, कर्मभोग और कर्म-बन्धन में कोई अन्तर है या एक ही है और यदि अन्तर है तो क्या है एवं तीनों के विधि-विधान और प्रभाव क्या हैं?			
सार 22
Q. क्या हम संगमयुग से थक गये हैं? यदि थक गये हैं तो उसका कारण क्या है, यदि नहीं थके हैं और कभी भी न थकें, उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?	24

सर्वांगीण स्वास्थ्य - कर्मों की थेरापी और परमात्मा

सर्वांगीण स्वास्थ्य और ईश्वरीय जीवन

सर्वांगीण स्वास्थ्य, विश्व में प्रचलित विभिन्न थेरापियां और चिकित्सा पद्धतियाँ

“तुम मेरे बने गोया विश्व के मालिक बनें। तुम जानते हो शिवबाबा स्वर्ग का रचयिता है। अभी हम शिवबाबा के बच्चे बने हैं, भविष्य में स्वर्ग के मालिक बनेंगे। तो कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। ... तुम यह भी जानते हो कि यह पुराना शरीर है, कर्मभोग भोगना पड़ता है। मम्मा-बाबा भी खुशी से कर्मभोग भोगते हैं, फिर भविष्य 21 जन्म कितना सुख मिलेगा।”

सा.बाबा 4.07.13 रिवा.

ये सृष्टि कर्म और फल का एक अनादि-अविनाशी खेल है, जिसका ज्ञान ज्ञान सागर परमात्मा ही कल्पान्त में आकर देते हैं। इस खेल में अपना पार्ट बजाने के लिए तन-मन-धन-जन का स्वस्थ होना अति आवश्यक है। परमात्मा से प्राप्त ज्ञान के आधार पर ही आत्मायें तन-मन-धन-जन का सम्पूर्ण स्वास्थ्य को प्राप्त करते हैं, इसलिए परमात्मा को बैद्यराज भी कहा जाता है और सभी आत्मायें उनको याद करती हैं।

इस विश्व-नाटक में कर्म प्रधान है, इसलिए कोई भी रोग-शोक जीवात्मा को कर्मों के फलस्वरूप ही होता है। जीवात्मा जो भी कर्म करती है, उससे जड़-जंगम और चेतन प्रकृतियाँ प्रभावित होती है। द्वापर से आत्मायें अनेक प्रकार के विकर्म करती आई हैं और कर रही हैं, इसलिए अभी कल्पान्त में अनेक प्रकार के रोग-शोक कर्मों का वह हिसाब-किताब पूरा करने के लिए आते हैं और आते रहेंगे। इस सम्बन्ध में परमात्मा ने बताया है कि कर्मभोग अन्त तक आना ही है। अभी परमात्मा ने जो कर्मों की थेरापी सिखाई है, उससे पुराने कर्मों का हिसाब-किताब पूरा होता है और श्रेष्ठ कर्मों से भविष्य के लिए श्रेष्ठ स्वास्थ्य का खाता जमा होता है।

वर्तमान समय विश्व में अनेक प्रकार की थेरापियाँ प्रचलित हैं, जिनकी गणना करना भी कठिन है और सभी थेरापियों और चिकित्सा पद्धतियों वाले

सम्पूर्ण स्वास्थ्य अर्थात् सर्व प्रकार के रोगों के निदान का दावा करते हैं परन्तु किसी थेरापी पर यह विश्वास करना कि वह हमको सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान कर सकती है, अपने आपको धोखा ही देना है क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में कोई थेरापी वाला सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान नहीं कर सकता है परन्तु विश्वास और पुरुषार्थ के आधार किसी रोग विशेष में वह मदद अवश्य करता है। सम्पूर्ण स्वास्थ्य तो एक परमात्मा के द्वारा बताई गई कर्मों की थेरापी से सम्भव है। अभी हम परमात्मा के बनें हैं और उसने हमको सम्पूर्ण स्वास्थ्य का यथार्थ मार्ग बताया है और यह भी बताया है कि कर्मभोग आत्मा को अनेक जन्मों के पापों फलस्वरूप आता है और अन्त तक आना ही है परन्तु जो ज्ञान-योग का यथार्थ पुरुषार्थ करता है या करेगा, वह इस कर्मभोग की वेदना से मुक्त रह सकता है अर्थात् कर्मभोग तो आयेगा, उसकी वेदना भी होगी परन्तु यथार्थ ज्ञान और योग से वह वेदना महसूस नहीं होगी या खत्म हो जायेगी।

सर्वांगीण स्वास्थ्य और कर्मों की थेरापी

“अभी बाप कहते हैं - तुम अपनी अविनाशी दवाई करते रहो। हम ऐसी संजीवनी बूटी देते हैं, जो तुम कब बीमार नहीं पड़ेंगे। सिर्फ पतित-पावन बाप को याद करते रहो तो तुम पावन बन जायेंगे। ... भक्ति करते हम नीचे ही गिरते आये हैं, अभी बाप ज्ञान देकर ऊपर चढ़ाते हैं। पारलौकिक बाप अभी सच्ची कमाई कराते हैं।”

सा.बाबा 15.06.68

सुख और दुख दो शब्द है, दोनों का कारण क्या है, वह भी विचारणीय है। यह विश्व-नाटक कर्म और फल पर आधारित है, सुख और दुख इसके दो पहलू हैं। हमारे इस ब्राह्मण जीवन का आधार बाबा है, जो ज्ञान का सागर है और सुख-शान्ति सम्पन्न नये विश्व का निर्माता है। बाबा ने हमको कर्म और फल का स्पष्ट ज्ञान दिया है। बाबा ने यह भी बताया है कि सुखी जीवन के लिए स्वस्थ तन, स्वस्थ मन, स्वस्थ धन और स्वस्थ जन - चारो आवश्यक है और चारो में सन्तुलन चाहिए। अब यह सन्तुलन कैसे स्थापित हो, उसके लिए विचार कर, अभीष्ट पुरुषार्थ करने वाला ही सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव कर सकता है। बाबा ने

हमको वर्तमान जीवन में दुख-अशान्ति के कारण भी बताये हैं और उनका निवारण भी बताया है। शरीरिक और मानसिक व्याधियाँ दुख-अशान्ति के निमित्त कारण है परन्तु मूल कारण आत्मा के विकर्म हैं। विकर्मों का खाता समाप्त कर, सुकर्मों का खाता जमा करना ही सर्वांगीण स्वास्थ्य का एकमात्र साधन है। बाबा ने हमको विकर्मों का खाता खत्म करने और सुकर्मों का खाता जमा करने का विधि-विधान भी बताया है। सुकर्मों का खाता जमा करने का एकमात्र समय यह संगमयुग ही है।

विभिन्न प्रकार के रोग, उनके कारण और निवारण

वर्तमान जगत में जीवात्मों के अनेक प्रकार के रोग हैं और उन रोगों के अनेक कारण हैं, उनमें से मुख्य-मुख्य रोगों और उनके कारणों पर यहाँ विचार करते हैं।

दैहिक रोग अर्थात् कर्मभोग

जैसे आत्माओं के साथ आत्मा के हिसाब-किताब बनते हैं और चुक्ता करना होता है, ऐसे ही जड़ प्रकृति के साथ भी हमारे हिसाब-किताब का खाता चलता है। अनेक जन्मों का प्रकृति के साथ हमारे हिसाब-किताब का खाता हैं, जो अभी कल्पान्त में पूरा होता है। जब आत्मायें प्राकृतिक साधनों का दुरुपयोग करती हैं या उनको प्रदूषित करती हैं, तो प्रकृति के साथ दुखदाई खाता बनता है, जिनके फलस्वरूप जीवात्मा दैहिक रोग अर्थात् कर्मभोग होता है अर्थात् उसका हिसाब-किताब आत्मा को कर्मभोग के रूप में पूरा करना ही पड़ता है।

मानसिक रोग

मानसिक रोग, दैहिक रोगों से भी अधिक खतरनाक अर्थात् दुखदाई हैं। दुनिया में देखें तो जीवघात करने वालों में अधिकांश धन और तन से मध्यम वर्ग के होते हैं अर्थात् तन से स्वस्थ होते हैं परन्तु मानसिक रूप में कमजोर अर्थात् मानसिक रोगी होते हैं। जिसके वशीभूत होकर वे जीवघात करते हैं। मानसिक

रोग अनेक प्रकार के दैहिक रोगों के भी कारण बनते हैं।

मानसिक रोगों का कारण अज्ञानता है। अज्ञानता के वशीभूत देहाभिमान और देहाभिमान के वशीभूत आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका के वशीभूत होकर दुख-अशान्ति का अनुभव करती है और उस दुख-अशान्ति का कारण अन्य आत्माओं को समझकर, उनके साथ अनेक प्रकार अनुचित व्यवहार करती हैं, जो आत्मा के मानसिक रोगों के कारण बनते हैं। कभी-कभी उनके वशीभूत आत्मा जीवघात भी कर लेती है।

आध्यात्मिक रोग

आध्यात्मिक रोगों का कारण भी अज्ञानता ही है। आत्मायें दुनिया में दुख-अशान्ति को देखकर अपने आत्म-कल्याण का पुरुषार्थ करती हैं परन्तु यथार्थ मार्ग न होने के कारण गुरुओं के पास, तीर्थों आदि में भटकती रहती हैं। अनेक प्रकार के व्रत-नियम अपनाते हैं परन्तु विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियम अनुसार उनकी यह भटकना बढ़ती ही जाती है। अन्त में जब आध्यात्म के आदि-अनादि गुरु परमात्मा आते हैं तब उनको यथार्थ मार्ग मिलता है और भटकना बन्द होता है। आत्मात्मिक रोगों के कारण भी कई आत्मायें जीवघात करती हैं। जैसे काशी कलवट खाना, बलि चढ़ना-चढ़ाना आदि-आदि।

सम्बन्धों के रोग अर्थात् कर्म-बन्धन

अनेक जन्मों के आत्माओं के साथ विकर्मों के बुरे हिसाब-किताब के कारण आत्माओं के सम्बन्धों के रोग अर्थात् कर्म-बन्धन आते हैं, जिनसे आत्माओं के आत्माओं के साथ के सब हिसाब-किताब चुक्ता होते हैं। अन्त में तो आधे कल्प के हिसाब-किताब चुक्ता होते हैं।

रोग और वर्तमान परिस्थितियाँ

A. आत्मा पर आधे कल्प के विकर्मों का बोझ है, जो ही जीवात्मा के रोगों का मूल कारण है। साथ-साथ वर्तमान जगत प्राकृतिक रूप से या मानवीय कारणों से

तत्व भी तमोप्रधान हो गये हैं, जिससे वातावरण दूषित हो गया है अर्थात् वातावरण में अत्यधिक कार्बन है, खाद्य-पदार्थों में रासायिक खादों का प्रयोग, अन्न और अन्य खाद्य पदार्थों के संरक्षण में विषैली दवाइयों का उपयोग होता है, आदि-आदि भी रोगों का कारण हैं। वर्तमान समय की परिस्थितियों को देखते हुए इन सबसे बचा भी नहीं जा सकता है क्योंकि बढ़ती हुई जनसंख्या और वातावरण को देखते हुए इन सबका उपयोग भी अति आवश्यक हो गया है। इन सबके कारण रोग-शोक बढ़ना ही है।

B. वर्तमान जीवन शैली के अनुसार मनुष्य अपेक्षाकृत शुद्ध पदार्थों को भी केमिकल्स से रिफाइन करके अर्थात् दूषित करके प्रयोग करने का आदती हो गया है। यह प्रक्रिया भी अनेक रोगों को जन्म दे रही है। अनियमित, अत्यधिक और अयुक्त खान-पान भी रोगों के कारण हैं।

C. आत्माओं के तमोप्रधान होने के कारण परस्पर व्यवहार में भी कटुता आ गई है, जिससे मानसिक टेन्शन बढ़ता जा रहा है और विश्व में गृहयुद्ध की समस्यायें पैदा हो गई हैं। मानसिक तनाव भी अनेक प्रकार के दैहिक रोगों का कारण है।

D. अभी कल्पान्त का समय है, आत्माओं को पावन बनकर वापस घर जाना है, इसलिए आत्माओं के साथ के और प्रकृति के साथ के सभी हिसाब-किताब पूरे होने हैं, इसलिए भी अनेक शारीरिक और मानसिक रोग होते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ड्रामा अनुसार जहाँ जगत पहुँच गया है, वहाँ से ड्रामा की गाड़ी वापस नहीं हो सकती है अर्थात् कृषि-क्षेत्र में जो रासायनिक खादों का उपयोग हो रहा है, वर्तमान बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए उससे बचा नहीं जा सकता है। अन्न और खाद्य-पदार्थों के संरक्षण में विषैली दवाइयों का प्रयोग आवश्यक हो गया है, उससे भी बचा नहीं जा सकता है। वातावरण में जो प्रदूषण है, वह भी कल्पान्त तक कम होने वाला नहीं है। आत्माओं के कर्मों के सभी हिसाब-किताब पूरे होने ही हैं, इसलिए भी रोग-शोक से बचा नहीं जा सकता है। ऐसी परिस्थिति में हमारा क्या कर्तव्य है, वह विचारणीय है अर्थात् इन सबके बीच में ही हमको अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ रहने का मार्ग खोजना पड़ेगा।

रोगों का निदान

बाबा ने कहा है - सुखी जीवन के लिए तन-मन-धन-जन चारो स्वस्थ चाहिए और चारो कैसे स्वस्थ हों, उसका विधि-विधान भी बताया है।

वर्तमान जगत में शारीरिक रोग निवारण की पद्धतियों अर्थात् थेरापियों की बाढ़ सी आ गई है और हर थेरापी वाला अपनी थेरापी का इण्टरनेट, समाचार पत्र, आदि के माध्यम से प्रचार-प्रसार करता है और हर थेरापी वाला दावा करता है कि वह सभी प्रकार रोगों का निवारण कर सकता है परन्तु कितना निवारण होता है, यह विचारणीय है क्योंकि दुनिया में दिनोदिन रोग बढ़ते ही जाते हैं। कुछ समय के लिए उन थेरापियों से कुछ रोग निवारण का आभास होता है, परन्तु एक रोग का निवारण होता है तो दूसरा अपना खाता खोल देता है।

जैसे आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्म-कल्याण के लिए गुरु करते हैं तो किसको गुरु करें, वह जानना भी आवश्यक है क्योंकि वर्तमान जगत में अनेक धार्मिक गुरु हैं, उसी प्रकार हम सर्वांगीण स्वास्थ्य के लिए किस थेरापी को अपनायें, वह जानना भी अति आवश्यक है क्योंकि दुनिया में अनेक थेरापियाँ और रोग-निवारण के विधि-विधान प्रचलित हैं। इसके लिए जिस थेरापी में हमारी भावना है, उसके अविष्कारक के जीवन को भी देखें कि वह कहाँ तक उससे स्वयं को निरोगी रखता है। बिना सोचे-समझे हम थेरापियों के पीछे पड़ेंगे तो एक रोग खत्म होगा, दूसरा आ जायेगा और हम और ही परेशान हो जायेंगे। रोग के निदान के लिए पुरुषार्थ तो आत्मा को करना ही होगा, परन्तु समझकर करेंगे तो अपेक्षाकृत अच्छा होगा।

“साइलेन्स की शक्ति से अप्राप्त आत्मा को, अशान्त-दुखी, रोगी आत्मा को दूर बैठे भी शान्ति, शक्ति, निरोगीपन का वरदान दे सकते हो। ... शक्तियों के जड़ चित्रों में वरदान देने का स्थूल रूप हस्तों के रूप में दिखाया है, हस्त भी एकाग्र रूप दिखाते हैं। वरदान का पोज़ हस्त, दृष्टि और संकल्प एकाग्र ही दिखाते हैं। ऐसे चेतन्य रूप में एकाग्रचित्त की शक्ति को बढ़ाओ, तो रूहों की दुनिया में रुहानी सेवा होगी अर्थात् रूहों का आवाह्न करके रुहानी सेवा करें।”

अ.बापदादा 26.01.77

सर्वांगीण स्वास्थ्य, ज्ञान-योग, कर्मों की थेरापी और परमात्मा

हर आत्मा सुखी जीवन जीने के लिए सर्वांगीण स्वास्थ्य की कामना रखती है परन्तु सर्वांगीण स्वास्थ्य का आधार क्या है, हमारे शारीरिक-मानसिक रोगों का कारण क्या है, वह सब जानेगे, तब ही सर्वांगीण स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकेंगे और खुशी में रह सकेंगे। जब रोग के कारण का ज्ञान होता है, तब यथार्थ रीति उसका निवारण सम्भव है। वास्तविकता ये है कि कोई भी रोग जीवात्मा के विकर्मों के फलस्वरूप ही होता है, इसलिए उसका निदान केवल शरीर के आधार पर सम्भव नहीं है। उसके लिए कर्मों पर भी ध्यान देना होगा। जीवात्माओं के विकर्मों का खाता कई जन्मों से संचित होता है, जिसको समाप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के दैहिक और मानसिक रोग होते हैं। विकर्मों का खाता सम्पूर्ण रीति खत्म किये बिना सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इसलिए जो भी रोग होते हैं, उनके निदान के लिए जो भी थेरापियों और चिकित्सा पद्यतियों का आत्मा उपयोग करती है, उसके लिए अनेक आत्माओं के सम्पर्क में आती है, उससे विकर्मों का संचित हिसाब-किताब कुछ हद तक कम होता है परन्तु सम्पूर्ण खत्म नहीं होता है। वैद्यराज ज्ञान सागर परमात्मा ने जो हमको जो ज्ञान दिया है और कर्मों की जो थेरापी सिखाई है, उसके अनुसार कर्मयोग से आत्मा का संचित खाता खत्म होता है, आत्मा नये विकर्मों से बचती है, इसलिए नया खाता नहीं बनता है और ज्ञान-योग की धारणा से सुकर्मों का खाता जमा भी करती है, जिससे ही आत्मा को सर्वांगीण स्वास्थ्य लाभ सम्भव होता है।

सर्वांगीण स्वास्थ्य के लिए ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक का और कर्मों की थेरापी का यथार्थ ज्ञान दिया है। बाबा ने बताया है कि हमारा आधे कल्प के विकर्मों का जो भी हिसाब-किताब रहा हुआ है, वह सब अभी खत्म होना है, इसलिए कर्मभोग और कर्म-बन्धन का आना आवश्यक सम्भावी है और उसके निदान के लिए पुरुषार्थ करना भी आवश्यक है। रोगों के निदान के लिए पुरुषार्थ करते हुए, संगमयुगी कर्म करने वाला ज्ञानी आत्मा कर्मयोग से उस कर्मभोग से सहज मुक्त हो सकता है। संगमयुगी कर्म अर्थात् निश्चयबुद्धि होकर एक परमात्मा की याद और परमात्मा के साथ विश्व-कल्याण के कर्तव्य में

सहयोग। याद से कर्मभोग को सहन करने की शक्ति मिलेगी और विश्व-कल्याण के कर्तव्य में प्रवृत्त रहने से कर्मभोग का खाता मर्ज होकर कर्मयोग का खाता जमा होगा, जिससे ही हम सम्पूर्ण स्वस्थ रह सकते हैं।

कई ज्ञानी ब्राह्मण आत्मायें अनेक थेरापियों का, विभिन्न चिकित्सा पद्यतियों का, तन्त्र-मन्त्र का, अनेक धातुओं और पत्थरों के उपयोग का सहारा लेते भी स्वयं को कर्मभोग से मुक्त अनुभव नहीं कर पा रहे हैं अर्थात् सन्तुष्ट नहीं होते हैं। इसे अपनी ज्ञान-योग, कर्मों की थेरापी में निश्चय की कमी अर्थात् संशय कहें, अज्ञानता कहें, यह भी विचारणीय है। हम सर्वशक्तिवान परमात्मा के साथ विश्व-कल्याण के कर्तव्य में सहयोगी हैं, इसलिए हमारा पुरुषार्थ ऐसा हो, जिससे हमारा कल्याण हो, हम विश्व-कल्याण में सहयोगी बनें, अन्य आत्माओं के लिए उदाहरण स्वरूप बनें, हम पथभ्रष्ट होकर, किसको पथभ्रष्ट करने के निमित्त न बनें। हम कहाँ खड़े हैं, इसको हर एक स्वयं ही समझ सकते हैं और निर्णय कर सकते हैं कि हम कैसे कर्मभोग से मुक्त हो संगमयुगी परम प्राप्तियों की अनुभूति करें और अन्य आत्माओं को करायें।

वास्तव में दुनिया में जो भी थेरापियाँ निकली हैं, वे सब ऐसी ही हैं जैसे पत्तों को सींचने से वृक्ष को हरा-भरा करने की परिकल्पना। रोग की जड़ क्या है, उसकी वास्तविकता का ज्ञान उनके अविष्कारकों को भी ही नहीं है, जो वैद्यराज परमात्मा ने ही बताया है कि जीवात्मा के सभी रोगों का कारण उसके पास्ट के कर्म हैं। जब हमारे भूतकाल के विकर्मों का खाता खत्म होगा, नये विकर्मों का करना बन्द होगा और भविष्य के लिए सुकर्मों का खाता जमा होगा, तब ही हम सदा के लिए रोग-मुक्त हो सर्वांगीण स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं।

बाबा ने हमको जो ज्ञान-योग की थेरापी अर्थात् कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय प्राप्त करने की थेरापी सिखाई है, वही यथार्थ में समस्त रोगों के निवारण का एकमात्र सिद्धान्त है। आवश्यकता अनुसार किसी भी थेरापी या चिकित्सा पद्यति से उपचार करने के साथ परमात्मा के द्वारा सिखाई कर्मों की थेरापी पर निश्चयबुद्धि होकर आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की याद, अशरीरीपन का सफल अभ्यास, परमात्मा की याद में खाना बनाना और खाना, विश्व-नाटक

के यथार्थ ज्ञान की धारणा से व्यर्थ और अशुद्ध संकल्पों से मुक्त रहना, सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखना, नियमित मुरली का अध्ययन, आदि विधि-विधानों को यथार्थ रीति अपनाने वाला ही सर्वांगीण स्वास्थ्य लाभ का अनुभव कर सकता है।

बाबा ने हमको जो कर्मों की थेरापी का जो विधि-विधान बताया है, उसको समझकर अपने अव्यक्त स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा से योगयुक्त होकर कर्मभोग और कर्म-बन्धन के कारण आई व्याधि पर अपनी मन-बुद्धि को एकाग्र करने और निदान का संकल्प रखने से भी व्याधि का निदान हो सकता है। नियमित शुद्ध वातावरण में व्यायाम, आसन, प्राणायाम आदि का अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार पुरुषार्थ करने से शरीर को जो आक्सीजन मिलती है, उससे भी अनेक शारीरिक रोगों का स्वतः निदान होता है।

हमको इस सत्य को भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है कि हमको उतना ही उपभोग का अधिकार है, जिससे हमारी कार्य-क्षमता बढ़ती रहे या स्थिर रहे। यदि हम प्राप्त सत्ता के आधार पर आवश्यकता से अधिक विश्व की या यज्ञ की साधन-सम्पत्ति का उपभोग करते हैं तो वह रोग के रूप में हमारे को अवश्य भोगना होगा। ब्रह्मा बाबा ने किसी साधन-सत्ता का दुरुपयोग या अनावश्यक उपयोग नहीं किया, इसलिए प्रकृति ने उनका अन्त तक साथ दिया। विश्व की कोई भी आत्मा, जो इन सिद्धान्तों को अपनाती है, उसको प्रकृति का सहयोग अवश्य मिलता है।

हमको अति महत्वाकांक्षी भी नहीं होना है क्योंकि देह विनाशी है और वर्तमान में उसके त्याग का कोई न कोई कारण अवश्य बनता है, कर्मों के हिसाब-किताब के वशीभूत कर्मभोग भी आयेगा, उसके निदान का पुरुषार्थ भी चलेगा। परन्तु हमको यह भी ध्यान रखना है कि ड्रामा की गाड़ी आगे बढ़ती है, कभी पीछे नहीं जाती है। आज विश्व में जो तत्वों में प्रदूषण है, जनसंख्या की वृद्धि है और जो आत्मायें आने वाली हैं, वे आनी ही है अर्थात् कल्पान्त के पहले जनसंख्या तो घटने वाली नहीं है और न ही तत्वों में कोई सुधार हो सकता है। इसलिए विश्व में रोग-शोक, कर्मभोग आदि तो बढ़ना ही है परन्तु हम ज्ञान-योग की यथार्थ रीति

धारणा करते हुए दैहिक स्वास्थ्य का यथा सम्भव पुरुषार्थ करेंगे तो अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ रह सकेंगे।

परमात्मा के द्वारा मिले आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के यथार्थ ज्ञान को समझकर ज्ञान-योग के सतत् अभ्यास से ही मानसिक रोगों का निदान हो सकता है। अशरीरीपन का नियमित अभ्यास अनेक प्रकार के मानसिक और शारीरिक रोगों का निदान करता है।

हमारे आदर्श तो ब्रह्मा बाबा ही है, जिनके लिए शिवबाबा भी उदाहरण देते हैं और वर्तमान में हम आदरणीय जानकी दादी के जीवन को देखें तो उन्होंने किस थेरापी के आधार पर इस आयु में ऐसा स्वास्थ्य पाया, जो इतना उमंग-उत्साह उनके जीवन में है। तो हम देखेंगे कि यह कर्मों की ही थेरापी है, जिसके आधार पर उन्होंने ऐसा स्वस्थ जीवन पाया है।

वर्तमान समय ज्ञानी भी विभिन्न थेरापियों के उपचार के साथ-साथ मन्त्र-तन्त्र, धातुओं का उपयोग, पत्थरों का उपयोग करके स्वस्थ रहने का पुरुषार्थ करते हैं। विचारणीय है कि क्या हमारे मम्मा-बाबा ने स्वस्थ रहने के लिए इन सबका आधार लिया था या ये सब करने की श्रीमत दी है?

दुनिया में प्रचलित विभिन्न थेरापियों से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की परिकल्पना करना बड़ी भूल होगी। इन सब थेरापियों को ध्यान में रखकर ज्ञान-योग में दर्पण में देखकर हम अपनी थेरापी निश्चित करें। रोग निवारण के लिए किसी भी थेरापी का सहारा लेना कोई पाप नहीं है परन्तु अति महत्वाकांक्षी, अति आशावान होकर ईश्वरीय मर्यादा के विपरीत सहारा लेना अवश्य ही पाप का खाता बढ़ाने वाला होगा।

गायन है खुशी जैसी खुराक नहीं। अब हमारी खुशी सदा कायम कैसे रहे, उस पर विचार करके, उसको अपनाकर वह खुराक खाते हुए सदा स्वस्थ रहना हर आत्मा का अपना पुरुषार्थ है।

सर्वांगीण स्वास्थ्य के लिए कर्मों की थेरापी ही एकमात्र साधन है, जो बाबा ने सिखाया है। दूसरी अन्य थेरापियों से जो भी स्वास्थ्य लाभ होता है, वह भी कर्मों के विधि-विधान अनुसार होता है। इसलिए हमको अति आशावान नहीं होना

है और किसी थेरापी से प्रभावित भी नहीं होना है। हाँ, आवश्यकता अनुसार उपचार अवश्य करना है और जो लाभ हो जाये, उसमें सन्तुष्ट रहना है और अपनी कर्मों की थेरापी जो बाबा ने सिखाई है, उस अनुसार पुरुषार्थ करना है।

“अभी तुम बच्चों को पता पड़ा है कि यह है रुहानी सर्जन। रूह को ही बीमारी लगी है, इसलिए यह रूह को ज्ञान का इन्जेक्शन लगा रहे हैं।... यह मन्मनाभव और अशरीरी भव का एक ही इन्जेक्शन है, जिससे आत्मा की आधा कल्प की बीमारी दूर होती है। देही-अभिमानि होकर रहने से पवित्रता-सुख-शान्ति का वर्सा जमा होता है।”

सा.बाबा 6.06.13 रिवा.

“तुम मेरे बने गोया विश्व के मालिक बनें। तुम जानते हो शिवबाबा स्वर्ग का रचयिता है। अभी हम शिवबाबा के बच्चे बने हैं, भविष्य में स्वर्ग के मालिक बनेंगे। तो कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। ... तुम यह भी जानते हो कि यह पुराना शरीर है, कर्मभोग भोगना पड़ता है। मम्मा-बाबा भी खुशी से कर्मभोग भोगते हैं, फिर भविष्य 21 जन्म कितना सुख मिलेगा।”

सा.बाबा 4.07.13 रिवा.

“कोई बीमारी छूटती जाती है तो खुशी होती है ना। तुम भी जानते हो कि अब जन्म-जन्मान्तर के लिए सभी आफतें हट जायेंगी। अभी हम बाबा के पास जाते हैं। यह सब विचार सागर मन्थन करके प्वाइन्ट्स निकालना होता है। बाबा राय बतलाते हैं कि ऐसे-ऐसे अपने साथ बातें करो। ... कितनी वण्डरफुल नॉलेज है। बाबा रोज़-रोज़ गुह्य राज़ समझाते रहते हैं।”

सा.बाबा 4.07.13 रिवा.

Q. माया, कर्मभोग और कर्म-बन्धन में कोई अन्तर है या एक ही है और यदि अन्तर है तो क्या है एवं तीनों के विधि-विधान और प्रभाव क्या हैं?

आधे कल्प के तमोगुणी विकारी स्वभाव और संस्कार के वश व्यर्थ संकल्प-विकल्प, विकारों का आकर्षण माया का रूप हैं।

प्रकृति के साथ के व्यवहार, उसके दुरूपयोग के कारण जो दैहिक व्याधियाँ आती हैं, वे कर्मभोग कहे जायेंगे। आत्माओं के समान प्रकृति के साथ भी आत्माओं के हिसाब-किताब चलते हैं, जिनको कर्मभोग के रूप में चुक्ता करना होता है।

देहाभिमान के वशीभूत स्वार्थपरता के कारण आत्माओं के साथ व्यवहार में जो कटुता आती है, विकर्म होते हैं, जिनका हिसाब-किताब बनता है और वह चुक्ता करने के लिए कर्म-बन्धन होता है। सारे कल्प में आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब का बचा हुआ खाता आत्मा में संचित रहता है, जो कल्पान्त में चुक्ता होता है। उसमें जो आधे कल्प के विकारी हिसाब-किताब हैं, वे कर्म-बन्धन का कारण बनते हैं।

मनन-चिन्तन कर परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान की यथार्थ समझ और आत्मिक स्वरूप के गहन अभ्यास और परमात्मा की याद से हम अपने विकारी स्वभाव-संस्कार को बदल सकते हैं अर्थात् माया पर जीत पा सकते हैं। इसके लिए ज्ञान का मनन-चिन्तन और उसकी यथार्थ समझ धारण करना अति आवश्यक है।

प्रकृति के साथ प्रकृति के संसाधनों के दुरुपयोग से जो हिसाब-किताब बने हैं, जिनके कारण कर्मभोग आता है, उसके लिए परमात्मा की याद, अशरीरीपन का अभ्यास करने से जो वायब्रेशन पैदा होता है, वह प्रकृति को भी शुद्ध करता है अर्थात् उसके साथ हमारे हिसाब-किताब को खत्म करता है। परन्तु पहले से ये सब अभ्यास किया हुआ होगा तो ही कर्मभोग के समय वह काम आयेगा अर्थात् उसकी वेदना से हम मुक्त रह सकेंगे।

विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थ समझ को धारण कर आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब के विधि-विधान को समझकर हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रखना और उनकी मन्सा सेवा से कर्म-बन्धन पर विजय पाई जा सकती है।

तीनों का परस्पर सम्बन्ध है और चुक्ता करने में भी तीनों का साथ रहता है परन्तु प्रधानता किसी एक की रहती है, उस समय उसका निदान करना अति आवश्यक होता है।

इन तीनों का या तीनों में से किसी एक का जब प्रभाव (Force) होता है, उस समय उसके निदान के लिए पुरुषार्थ सम्भव नहीं होता है, इसलिए उसके निदान का पुरुषार्थ शान्ति के समय में ही करना होता है। इसलिए पहले से ही ज्ञान

का मनन-चिन्तन कर यथार्थ समझ धारण करना, अशरीरीपन का अभ्यास करना और शुभ-भावना, शुभ-कामना का स्टॉक जमा करना अति आवश्यक है।

जैसे कोई मनुष्य, मनुष्य को मुक्ति-जीवनमुक्ति नहीं दे सकता है, ऐसे ही कोई भी थेरापी वाला किसको सदा स्वस्थ नहीं बना सकता है। भल डाक्टर्स रोगों का अस्थाई निदान तो करते हैं परन्तु उससे मनुष्य सदा स्वस्थ नहीं बन जाता है। सर्वांगीण स्वास्थ्य नहीं प्राप्त कर सकता है। एक रोग जाता है, दूसरा आ जाता है। तन का जाता है तो मन का आ जाता है। ये कर्मों की थेरापी ही है, जो आत्मा को सर्वांगीण स्वास्थ्य प्रदान कर सकती है।

ये सब उपचार करते भी कर्मभोग या कर्म-बन्धन से घबराना नहीं है क्योंकि इसमें अनेक गुह्य रहस्य छिपे हुए हैं। कर्मभोग के कारण आत्माओं अनेक आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब चुक्ता होते हैं, कर्मभोग की अनुभूति होने से ही एक जीवात्मा, दूसरी के कर्मभोग की पीड़ा को अनुभव करता है, जिससे उसके साथ सहानुभूति जाग्रत होती है। वैसे भी सुख-दुख के इस विश्व-नाटक में दुख से ही सुख की और सुख से ही दुख की अनुभूति का विधान बना हुआ है।

परमात्मा ने हमको जो कर्मों की थेरापी सिखाई है, कर्मों का ज्ञान दिया है, उसको जानने और उसके अनुसार पुरुषार्थ करने से कर्मभोग होते भी, उसको खुशी से सहन करने की शक्ति मिलती है और आधे कल्प के लिए सर्वांगीण स्वास्थ्य को प्राप्त करते हैं।

“बाबा समझाते हैं कर्मों का भोग भी सारा यहाँ ही चुक्त्तू करना है। मम्मा-बाबा को भी कर्म का भोग भोगना पड़ता है। रहा हुआ सारा हिसाब-किताब यहाँ ही निकलेगा। ऐसे नहीं कि ईश्वर का बना हूँ, फिर रक्षा क्यों नहीं करते हैं। नहीं, कर्मभोग तो जरूर यहाँ ही चुक्त्तू करना है।”

सा.बाबा 3.05.13 रिवा.

“तो परमात्मा और स्वर्ग के वर्से को याद कर कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। याद की मेहनत चाहिए। याद से पाप विनाश होंगे। तुम यह भी जानते हो कि यह पुराना शरीर है, कर्मभोग भोगना पड़ता है। बाबा-मम्मा कितना खुशी से कर्मभोग भोगते हैं। जानते हैं फिर भविष्य 21 जन्म सदा सुख में रहेंगे। ... कोई बीमारी छूटती है या कोई आफत आती है फिर हट जाती है तो खुशी होती है ना। ...

यह है विचार सागर मन्थन कर प्वाइन्ट्स निकालना। बाबा राय देते हैं कि ऐसे-ऐसे अपने से बातें करो।”

सा.बाबा 29.04.13 रिवा.

आवश्यकता अनुसार दैहिक रोगों के उपचार के लिए किसी भी थेरापी का सहारा लेने के साथ-साथ यथा सम्भव खान-पान की शुद्धि, योग में भोजन बनाना और खाना, शुद्ध वातावरण में नियमित व्यायाम आदि करने से हम अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ रह सकते हैं।

आध्यात्मिक रोगों और मानसिक रोगों का एकमात्र उपचार ही है परमात्मा को पहचान कर, उनके द्वारा दिये गये ज्ञान को मनन-चिन्तन कर यथार्थ रीति समझना, उसको धारण करना, उस पर निश्चयबुद्धि होकर परमात्मा की श्रीमत का पालन करना, नियमित योग का अभ्यास करना, उनकी मुरली रोज सुनना-पढ़ना और अन्य आत्माओं को वह ज्ञान सुनाना, समझाना, समझने में सहयोग करना। परमात्मा और दूसरी आत्माओं की दुआयें भी अनेक मानसिक रोगों के निदान में सहयोगी बनती हैं।

शारीरिक स्वास्थ्य को ही सम्पूर्ण स्वास्थ्य समझ लेना बड़ी भूल है। सभी थेरापी वाले या चिकित्सा पद्यतियों वाले शारीरिक स्वास्थ्य को ही स्वास्थ्य समझते हैं, जिससे दुनिया की सभी थेरापियाँ शारीरिक स्वास्थ्य का ही निदान करने का विधि-विधान सिखाने का पुरुषार्थ करते हैं।

रोगों के कारण हमारे अनेक आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब पूरे होते हैं। हम देखते हैं कभी-कभी किसी रोग के कारण अनेक अच्छे-अच्छे डाक्टरों के पास जाते, उनसे उपचार कराते हुए भी रोग का निदान नहीं होता है और अन्त में किसी साधारण व्यक्ति या डाक्टर के उपचार से रोग का निदान हो जाता है। यह विधि का विधान बना हुआ है कि हमको कल्पान्त में सभी आत्माओं और प्रकृति के साथ के हिसाब-किताब को पूरा करना ही है।

“सच्चा-सच्चा योग यह है, बाकी सब अल्पकाल के हेल्थ के लिए अनेक प्रकार के योग सिखाते हैं। अभी तुम एक बाप के साथ योग लगाने से एवर हेल्दी बनते हो। ... ये सब बातें बड़ी समझने की हैं। तुम हो रुहानी सोशल वर्कर, बाकी सब सोशल वर्कर हैं जिस्मानी। वे सब जिस्मानी सेवा करते हैं, तुम रूहों को ज्ञान

इन्जेक्शन लगाते हो, जिससे रूह प्योर बन जाये। रूह पवित्र होने से शरीर भी प्योर मिलता है।”

सा.बाबा 9.05.13 रिवा.

“आज देखो रोगों के लिए कितने इलाज, कितनी दवाइयाँ आदि निकालते रहते हैं लेकिन रोगी तो फिर भी बढ़ते जा रहे हैं, इसलिए दुख-अशान्ति बढ़ती ही जा रही है। इसलिए परमात्मा को पुकारते हैं। ... इन्सान में तो साधू-सन्त, महात्मा आदि सब आ गये। जिन्होंनेके लिए समझते हैं कि वे हमको पार करेंगे, परन्तु वे भी तो इन्सान हैं और इन्सान सब अन्धकार में हैं।”

मातेश्वरी 24.04.65

“आज देखो रोगों के लिए कितने इलाज, कितनी दवाइयाँ आदि निकालते रहते हैं लेकिन रोगी तो फिर भी बढ़ते जा रहे हैं, इसलिए दुख-अशान्ति बढ़ती ही जा रही है। ... जब मनुष्य पवित्र हैं तो नेचुरल हेल्दी हैं और उनकी बनावट, फीचर्स, ब्युटी आदि नेचुरल रहती है, जब अपवित्र बनते तो इसमें फर्क हो सकता है। बाकी ऐसे नहीं कि उसमें कोई 3 आँखें या 10 सिर... की बनावट होगी।”

मातेश्वरी 24.04.65

वर्तमान जगत में हम देखते हैं कि अनेक धर्म-गुरु अपनी संकल्प शक्ति से या आत्म-बल से अनेक चमत्कारिक कार्य करते रहते हैं अर्थात् तन्त्र-मन्त्र, जप-तप, अनुष्ठान आदि के द्वारा अनेक असाध्य रोगों का निदान कर देते हैं, अनेक चमत्कार दिखाते हैं, जिससे आत्मायें प्रभावित होती हैं, जो समाचार पत्रों में आते रहते हैं। कई आत्मायें ज्ञान मार्ग में भी संकल्प-शक्ति के ये सिद्धान्त उपयोग में लाते हैं तो उसे योगबल कहा जाये, आत्म-बल कहा जाये या संकल्प-शक्ति की सिद्धि कहा जाये? विचारणीय है कि क्या योगबल वाली आत्मायें अपने योगबल को भौतिक प्राप्तियों में उपयोग करेंगे और यदि करेंगे तो किस हद तक करेंगे।

योगबल परमात्मा ने हमको आत्म-कल्याण, विश्व के नव-निर्माण के अर्थ दिया है अर्थात् सिखाया है, न कि अल्पकाल की प्राप्तियों के लिए। जब हम योगबल को आत्म-कल्याण और विश्व के नव-निर्माण के अर्थ करते हैं तो उससे हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ती है और हमको आत्म-सन्तुष्टि होती है और जब हम उनको अल्पकाल की भौतिक प्राप्तियों या कार्यों की सिद्धि के लिए करते हैं तो

अन्य धर्म-गुरुओं के समान अल्पकाल का मान-शान मिलता है। भले ही कर्मभोग और कर्म-बन्धन के समय वह प्रयोग आवश्यक लगता है, परन्तु वह यथार्थ है या अयथार्थ है, यह विचारणीय है।

सार

सर्वांगीण स्वास्थ्य, कर्मों की थेरापी और परमात्मा

दुनिया में सदा स्वस्थ रहने के लिए या रोगों के निदान के लिए विभिन्न थेरापियाँ प्रचलित हैं परन्तु विश्व में रोग बढ़ते ही जाते हैं, मनुष्यों की अस्वस्थता बढ़ती ही जाती है। अभी वैद्यराज ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने हमको रोगों का कारण बताया है और उसके निदान के लिए अर्थात् सदा स्वस्थ रहने के लिए जो कर्मों की थेरापी सिखाई है, उसके द्वारा ही हम अपने दैहिक और मानसिक रोगों का निदान कर सकते हैं। उसके लिए उसको समझकर, उस पर निश्चय और विश्वास रखकर ईश्वरीय नियम-संयम, मर्यादाओं का यथार्थ रीति पालन करने से हम निरोगी बन सकते हैं अथवा पूर्व कर्मों के फलस्वरूप रोग आने पर उसकी वेदना से मुक्त रह इस ईश्वरीय जीवन में सदा सुख का अनुभव कर सकते हैं। जब तक रोग का कारण नहीं पता है, तब तक उसके निदान के लिए कितना भी पुरुषार्थ करो, उसका निदान नहीं हो सकता है।

‘एकाग्रता की शक्ति बहुत विचित्र रंग दिखा सकती है। वे सिद्धियों वाले भी एकाग्रता से ही सिद्धि प्राप्त करते हैं। स्वयं की औषधि भी एकाग्रता की शक्ति से कर सकते हैं और अनेक रोगियों को भी निरोगी बना सकते हैं, ऐसे बहुत विचित्र अनुभव इस एकाग्रता की शक्ति से कर सकते हैं। ... स्टॉप कहो तो संकल्प स्टॉप हो जाये, तब वरदानी रूप में जय-जयकार के नारे बजेगे।’

अ.बापदादा 28.01.77 दीदी जी के साथ

जिस समय जो हुआ, वह अवश्य होगा, उसे कोई रोक नहीं सकता। इस सन्दर्भ में हमारे को जो कर्मभोग आना है, वह अवश्य आयेगा और उसका निदान भी ड्रामा अनुसार होगा। उसके किसको दोष देना अज्ञानता है और ये अज्ञानता

आत्मा को और दुखी कर देती है अर्थात् कर्मभोग की महसूसता को बढ़ा देती है। हमको कर्मभोग के निदान के लिए आवश्यक उपचार जरूर करना है परन्तु उपचार के लिए किससे तुलना नहीं करनी है क्योंकि विविधतापूर्ण ड्रामा में हर के कर्म और फल का हिसाब-किताब अपना-अपना है।

“कर्मयोग का फल है सहजयोग और खुशी। कोई जो कुछ करता है, उसका प्रत्यक्षफल यहाँ ही पदमगुणा मिलता है। ... मन के खुश रहने से शरीर की व्याधि भी शूली से काँटा हो जाती है। ज्यादा सोचना नहीं। सोचने से निर्णय शक्ति कम हो जाती है। पेपर आना माना परिपक्व होना। इसलिए घबराना नहीं। पेपर्स फाउण्डेशन को पक्का करते हैं। फाउण्डेशन को कूटते हैं, तो वह कूटना नहीं है लेकिन मज़बूत करना है।”

अ.बापदादा 30.04.77 पार्टी से

“विकर्मों का बोझा सिर पर बहुत है। योग से ही विकर्म विनाश हो सकते हैं। विकर्मों का बोझा भस्म करना मासी का घर नहीं है। अजुन कुछ न कुछ विकर्मों का हिसाब-किताब रहा हुआ है, तब तो भोगना पड़ता है ना। विकर्मों का बोझा विनाश करने में कितनी मेहनत लगती है। अगर देरी से आयेगे तो कितना विकर्म विनाश कर सकेंगे! बहुत मुश्किल है।”

सा.बाबा 12.09.13 रिवा.

ज्ञान सागर बाबा ने हमको सदा स्वस्थ रहने के लिए कर्मों की थेरापी का ज्ञान दिया है, जिसमें बाबा ने हमको -

कर्मों का राज़ अर्थात् हर आत्मा के अपने कर्म ही रोग-शोक के कारण हैं।

कर्मों के संचित खाते और उनके कल्पान्त में पूरा होने का विधि-विधान,

विकर्म और विकर्मों के विनाश का विधि-विधान,

भविष्य के लिए श्रेष्ठ कर्मों का खाता संचित करने का विधि-विधान,

कर्म-बन्धन और कल्पान्त में कर्म-बन्धन का हिसाब-किताब के चुक्ता होने का राज़ आदि

इन सब राज़ों को समझकर हमको कर्मों के पुराने खाते को खत्म करने का पुरुरूपार्थ करना है। ज्ञान की यथार्थ धारणा कर अशरीरी बनने का सफल अभ्यास करना है। अभी कोई नया विकर्म नहीं करना है। दुखी होना, अपने रोग-

शोक के लिए दूसरे को दोष देना भी विकर्म है। विचारणीय है कि वेदना होना और दुखी होना अलग-अलग बातें हैं।

भविष्य के लिए परमात्मा की याद में श्रेष्ठ कर्म करके सुकर्मी का खाता जता करना है। ड्रामा के राज को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जड़-जंगम-चेतन के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रखना सबसे श्रेष्ठ कर्म है, जो सर्व प्रकार के श्रेष्ठ कर्मों का आधार है।

वैद्यराज परमात्मा की याद में आये हुए रोग के निदान के लिए जो उपाय बुद्धि में आये, उसको करते रहना। शान्त चित्त में ही यथार्थ संकल्प उत्पन्न होता है।

सबका ज्ञान दिया है, जिसको बुद्धि में रखकर यथार्थ पुरुषार्थ करने वाला ही सदा स्वस्थ रह सकता है। शारीरिक स्वास्थ्य से भी महत्वपूर्ण मानसिक स्वास्थ्य है। सृष्टि का नियम है, जिसकी आत्मा बलवान है, उसको शरीर भी बलवान अर्थात् स्वस्थ मिलता ही है।

Q. क्या हम संगमयुग से थक गये हैं? यदि थक गये हैं तो उसका कारण क्या है, यदि नहीं थके हैं और कभी भी न थकें, उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

यदि हम थक गये हैं तो उसका कारण है संगमयुग की प्राप्तियों का यथार्थ ज्ञान नहीं, उनकी अनुभूति नहीं, उनकी अनुभूति का सफल और सतत् अभ्यास नहीं। परमात्मा के हाथ और साथ की जो अनुभूति अभी संगमयुग पर यहाँ है, वह अनुभूति तीनों कालों और तीनों लोकों में कहाँ और कभी नहीं है और न हो सकती है।

ज्ञान सागर परमात्मा से जो ज्ञान-धन मिला है, उसकी जो अभी अनुभूति है, वह तीनों कालों और तीनों लोकों में कहाँ और कभी भी नहीं है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित हो निर्संकल्प, निर्विकल्प, शुभ-संकल्प की स्थिति में जो परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द, परम-सुख की अनुभूति अभी है, वह तीनों लोकों और तीनों कालों में कहाँ और कब भी नहीं हो सकती है।

आत्मिक स्वरूप परम-शान्त और परम-शक्ति सम्पन्न है। अभी ही हम अपने मूल स्वरूप में स्थित हो निर्संकल्प स्थिति में स्थित हो उस परम-शान्ति और

परम-शक्ति की अनुभूति कर सकते हैं, जो परमधाम में नहीं हो सकती है।

अभी परमात्मा का हाथ हमारे सिर पर है, उसका साथ है, उसके हाथ में हमारा हाथ है, हम उसके साथ विश्व नव-निर्माण के कर्तव्य में सहयोगी हैं, उससे जो परमानन्द की अनुभूति होती है, वह त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ और कभी नहीं हो सकती है। परमात्मा की छत्रछाया हमारे ऊपर है, उसका जो सुखद अनुभव अभी है, वह त्रिकाल और त्रिलोक में कहाँ और कभी नहीं हो सकता है।

ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी हमको जो विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है, उसके विधि-विधान बताये हैं, उनको यथार्थ रीति समझकर अपने अकाल तख्तनशीन होकर साक्षी स्थिति में स्थित हो इस विश्व-नाटक का दिग्दर्शन करने और उसकी अनुभूति का जो परम-सुख आत्मा अभी अनुभव करती है या कर सकती है, वह तीनों लोकों और तीनों कालों में कहाँ नहीं हो सकता है। बाबा ने हमको ट्रस्टीपन का जो ज्ञान दिया है और पाठ पढ़ाया है, उस स्थिति में स्थित होने से जो परम-सुख की अनुभूति होती है, वह त्रिकाल और त्रिलोक में कहाँ भी नहीं हो सकती है।

बाबा ने हमको यथार्थ ज्ञान देकर जो शुभ-संकल्प का पाठ पढ़ाया है और शुभ-कर्मों को करने का विधि-विधान बताया है अर्थात् आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण का जो कर्तव्य सिखाया है, उस कर्तव्य में तत्पर रहने से जो सुख और आनन्द की अनुभूति होती है, वह त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ और कभी भी नहीं हो सकती है।

सारा कल्प उतरती कला का ही समय और स्थिति है, यह वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग का समय और परमात्मा का साथ ही एकमात्र चढ़ती कला का है, जिसके महत्व का वर्णन सारे शास्त्र और धर्म-ग्रन्थ करते हैं, सब धर्म-पिताओं ने उसकी महिमा गाई है। इस सत्य को समझने से अभी आत्मा को जो अद्वितीय सुख की अनुभूति होती है, वह त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ और कब भी नहीं हो सकती है। संगमयुग के अतिरिक्त सारा कल्प तो उतरती कला का ही है, जो सतयुग आदि से ही आरम्भ हो जाती है, भले ही वहाँ सुख-साधनों की भरमार होने के कारण आत्मा उसकी अनुभूति उस समय नहीं करती है, परन्तु समयान्तर में तो

होती ही है।

अब प्रश्न है कि आत्मा ऐसे परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण संगमयुग पर थक क्यों गई है या थक क्यों जाती है? इस तथ्य पर विचार करेंगे तो देखेंगे कि आत्मा द्वारा आधे कल्प से किये गये विकर्मों और पाप-कर्मों का जो बोझ सिर पर है, जिसके फलस्वरूप आत्मा को कर्मभोग और कर्म-बन्धन से जो दुख-अशान्ति की अनुभूति होती है, वह थका रही है। परन्तु प्रश्न यह भी है कि क्या हम आत्मा पर चढ़े उस बोझ को कर्मभोग या कर्मयोग के द्वारा खत्म किये बिगर कर्मभोग और कर्म-बन्धन से छूट सकते हैं। इस सत्य का भी बाबा ने हमको ज्ञान दिया है कि कोई भी आत्मा इस बोझ को समाप्त कर कर्मातीत बनने के बिना परमधाम नहीं जा सकती है और जब परमधाम नहीं जा सकती तो सतयुग में जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। इसलिए बाबा ने कहा है - इस बोझ को उतारने के लिए आये हुए कर्मभोग और कर्म-बन्धन को खुशी-खुशी सहन करो और उसको सहन करने के लिए ही कर्मयोग का विधि-विधान बताया है। कर्मयोग के सफल अभ्यास से जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी तो कर्मभोग और कर्म-बन्धन से उत्पन्न वेदना कम महसूस होगी और उससे जो वृत्ति और वायब्रेशन्स पैदा होंगे, वे उसको हल्का कर देंगे। कर्मयोग से उत्पन्न वृत्ति और वायब्रेशन्स जड़-जंगम-चेतन तीनों को प्रभावित करते हैं और उनकी प्रतिक्रिया आत्मा पर होती है, जो आत्मा के कर्मभोग और कर्म-बन्धन की वेदना को हल्का कर देती है।

इस प्रकार इस सत्य पर विचार करें तो यथार्थ ज्ञान की कमी ही इसका मूल कारण है, इसलिए मनन-चिन्तन कर ज्ञान की यथार्थता को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में रहना या उसका सतत् अभ्यास ही संगमयुग के परम-सुख, परमानन्द, परम-शान्ति, परम-शक्ति की अनुभूति में रहने का आधार है और संगमयुग पर किसी भी प्रकार की थकावट से मुक्त सदा उमंग, उल्लास में रहने का एकमात्र साधन है।

“सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि लॉ कौनसा है? ड्रामा प्लेन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप अर्थात् भोगना। यह लॉ अर्थात् नियम ऑटोमेटिकली चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता

है कि इस कर्म का यह लेना वा इस कर्म की सज़ा यह है। लेकिन यह ऑटोमेटिक मशीनरी है, जिस मशीनरी को बच्चे जान नहीं सकते, इसलिए गाया है - कर्मों की गति अति गुह्य है।”

अ.बापदादा 3.5.77

“बाप को जान लिया, वर्सा भी पा लिया ... प्राप्ति का अनुभव भी करने लग गये, ईश्वरीय नशा, प्राप्ति का नशा भी चढ़ने लगा, प्रारब्ध का निशाना भी दिखाई देने लगा लेकिन आगे क्या हुआ? माया की चेलेन्ज को सफलता पूर्वक सामना नहीं कर पाया। ... इसलिए माया को बलवान देखकर दिल-शिकस्त हो जाते हैं, थक जाते हैं।”

अ.बापदादा 3.5.77

“कोई अपने में बाप के डॉयरेक्ट साथ और सहयोग लेने की हिम्मत न देख, राह पर चलने वाले साथियों को ही पण्डा बना लेते अर्थात् उन द्वारा ही साथ और सहयोग की प्राप्ति समझते हैं। बाप के बजाए कोई आत्मा को सहारा समझ लेते हैं, इसलिए बाप से किनारा हो जाता है। तिनके को अपना सहारा समझने के कारण बार-बार तूफानों में हिलते और गिरते रहते हैं और सदैव किनारा दूर अनुभव करते हैं।”

अ.बापदादा 3.5.77

“ऐसे ही कोई व्यक्ति के सहारे के साथ-साथ किसी न किसी प्रकार के सेलवेशन के आधार पर चलने का प्रयत्न करते हैं।... ऐसे सेलवेशन रूपी लाठी के आधार पर चलते रहते हैं अर्थात् अविनाशी बाप का आधार न ले, अल्पकाल के अनेक आधार बना लेते हैं। जो आधार विनाशी और परिवर्तनशील हैं।... इसलिए स्थिति भी एकरस नहीं रहती, बार-बार परिवर्तन होती रहती है।”

अ.बापदादा 3.5.77

“63 जन्मों के हिसाब यहाँ ही चुक्ती होने हैं, अपने पिछले संस्कार-स्वभाव बाहर इमर्ज हो सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं, उस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं। ... इन व्यर्थ संकल्पों की उल्लंघन के कारण पार नहीं कर पाते हैं, सोचने में ही टाइम वेस्ट कर देते हैं। कोटों में कोई ही तूफानों को भी ड्रामा का तोहफा समझ स्वभाव-संस्कारों की टक्कर को आगे बढ़ने का आधार समझ, माया को परखते हुए पार करते, सदा बाप को साथी बनाते हुए साक्षी होकर हर पार्ट को देखते सदा हर्षित हो चलते रहते हैं।”

अ.बापदादा 3.05.77

“याद रखो - सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी, तो सत्य के साथ की नाँव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती, इसलिए बाप को जिम्मेवारी देकर वापस नहीं ले लो। ... इस देहाभिमान के मैपन का अभाव हो (खत्म करो)। ... अपनी जिम्मेवारी सिर्फ एक समझो - जैसे बाप चलाये, वैसे चलेंगे; जो बाप कहे, वह करेंगे; जिस स्थिति के स्थान पर बिठाये, वहाँ बैठेंगे; श्रीमत में मैपन की मनमत को मिक्स नहीं करेंगे तो पश्चाताप से परे, प्राप्ति स्वरूप और पुरुषार्थ की सहज गति को प्राप्त करेंगे।”

अ.बापदादा 3.5.77

“घबराओ नहीं लेकिन गहराई में जाओ क्योंकि वर्तमान अन्तिम समय समीप होने के कारण एक तरफ अनेक प्रकार के रहे हुए हिसाब-किताब, स्वभाव-संस्कार वा दूसरे के सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा बाहर निकलेंगे अर्थात् अन्तिम विदाई लेंगे। बाहर निकलते हुए अनेक प्रकार की मानसिक परीक्षाओं रूपी बीमारियों को देखकर घबराओ नहीं, लेकिन इस अति को अन्त की निशानी समझो।”

अ.बापदादा 3.5.77

“दूसरी तरफ अन्तिम समय समीप होने के कारण कर्मों की गति की मशीनरी भी तेज रफ्तार से दिखाई देगी। धर्मराजपुरी के पहले यहाँ ही कर्म और उसकी सज़ा के साक्षात्कार होंगे। यदि सत्य बाप के सच्चे बच्चे बन, सत्य स्थान के निवासी बन, ज़रा भी असत्य कर्म किया तो प्रत्यक्ष दण्ड के अनेक वण्डरफुल रूप के साक्षात्कार यहाँ ही होंगे। ब्राह्मण परिवार वा ब्राह्मणों की भूमि पर पाँव ठहर नहीं सकेंगे। हर दाग स्पष्ट दिखाई देगा, छिपा नहीं सकेंगे। स्वयं अपनी गलती के कारण मन उलझता हुआ टिक नहीं सकेगा।”

अ.बापदादा 3.5.77

“सम्पन्न बनने में ही वण्डरफुल बातें देखेंगे क्योंकि यह प्रैक्टिकल पेपर होगा।... घबरायेंगे नहीं, और ही राजयुक्त, योगयुक्त हो, लाइट-हाउस हो वायुमण्डल को डबल लाइट बनायेंगे।... कमजोर को पहाड़ लगेगा और मास्टर सर्वशक्तिमान को राई अनुभव होगा। प्रैक्टिकल पेपर पास करने के ही नम्बर बनते हैं।... श्रेष्ठ पुरुषार्थी पेपर को खेल समझते हैं। खेल में घबराया नहीं जाता है, खेल तो मनोरंजन होता है।”

अ.बापदादा 3.5.77 दीदी जी से

“बाप ने कहा - साथी का हाथ पकड़ कर चलो, परन्तु साथ छोड़कर अपने ऊपर

बोझ उठाकर चलते हो तो मुश्किल लगता है। ... यह भी नहीं कह सकते हो कि मेरे पिछले संस्कार हैं। पिछले संस्कार हैं अर्थात् मरजीवा नहीं बने हैं। जब मरजीवा बन गये तो नया जन्म, नये संस्कार होने चाहिए। पिछले संस्कार पिछले जन्म के हैं, इस जन्म के नहीं। वह कुल ही दूसरा और यह कुल ही दूसरा। वह शूद्र कुल और यह ब्राह्मण कुल।”

अ.बापदादा 3.05.77 दीदी जी से

बाबा के उपयुक्त महावाक्यों पर विचार करें तो पुराने रहे हुए कर्मों के हिसाब-किताब चुक्ता होने ही हैं और भविष्य नई दुनिया में नम्बरवार पद पाने के लिए परीक्षाएँ भी होनी ही हैं, जिसके फलस्वरूप कर्मभोग और कर्म-बन्धन का आना अवश्य सम्भावी है। इसलिए घबराना नहीं है, एक बाप का ही सहारा और एक बाप को ही आधार बनाकर रखना है, जिससे उनको सहज पार कर लेंगे।

अभी हमारा नया ब्राह्मण जन्म है, इसलिए उसकी कुल-मर्यादा अनुसार हमको अपना तन-मन-धन, बुद्धि उसके कर्तव्य में ही लगी रहे, जिससे इस संगमयुग पर कोई नया पाप कर्म न हो, सदा ही शुभ कर्म हों।

घबराने के बजाये ज्ञान सागर बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसकी गहराई में जाकर संगमयुग की परम-प्राप्तियों की अनुभूति करते हुए सदा हर्षित जीवनमुक्त स्थिति में रहना है। आत्मिक स्वरूप परम-प्राप्तियों से सम्पन्न है। बुद्धि में दृढ़ निश्चय रहे कि हम सर्वशक्तिमान बाप के बनें हैं, बाप की छत्रछाया हमारे ऊपर है, बाप का हाथ और साथ है, इसलिए हमारे जीवन में असफलता हो नहीं सकती।

“अभी यहाँ तुम्हारी बुद्धि का ताला खुला हुआ है। तुम इस ड्रामा के एक्टर्स हो। तुम अभी इस ड्रामा के क्रियेटर, डॉयरेक्टर, मुख्य एक्टर्स, ड्युरेशन आदि को जानते हो। यह नॉलेज जिसकी बुद्धि में रहेगी, उसको अपार खुशी रहेगी।... गॉड फादर को ही नॉलेजफुल, वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी कहा जाता है। वही आकर संगम पर रचयिता और रचना की नॉलेज देते हैं।”

सा.बाबा 16.09.13 रिवा.

“तुमको ज्ञान सागर बाप द्वारा कितनी बड़ी नॉलेज मिली है। तो तुम्हारा मगज़ ज्ञान से कितना भरपूर रहना चाहिए, तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए।... इस समय तुम बच्चे मास्टर नॉलेजफुल बनते हो। बाकी आत्मा जो तमोप्रधान बनी है, उसको

सतोप्रधान बनाना है। अभी तक कोई सतोप्रधान नहीं बना है।... सतोप्रधान जब बन जायेंगे तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सबकी कर्मातीत अवस्था हो जायेगी।”

सा.बाबा 16.09.13 रिवा.

“अभी तुम तीनों लोकों और तीनों कालों को जान गये हो। तुम्हारी बुद्धि में सतयुग से लेकर कलियुग तक का सब राज़ है। तुम्हारे अन्दर यह ज्ञान टपकता रहे तो सदैव खुशी में रहेंगे। यह ज्ञान होने से चिन्ता फिकर की कोई बात नहीं रहती है, तुम फिकर से फारिग हो जाते हो।... तुम जानते हो - अभी बाप हमको अपने जैसा बना रहे हैं, उनमें जो नॉलेज है, वह आत्माओं को दे रहे हैं।”

सा.बाबा 16.09.13 रिवा.

अमृत-धारा

इस विश्व-नाटक का यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता, परन्तु जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियाँ, सर्व सुख स्वतः होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है; सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है; ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है; राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका जनित व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ चिन्तन का नाम-निशान नहीं होता है; मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, सुख-दुख, प्राप्ति-अप्राप्ति, यश-अपयश, अपने-पराये में समान दृष्टि और स्थिति होती है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वतः जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वतः होती है, इसलिए सदा निरसंकल्प और निर्विकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व आत्माओं की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होती है।

यह सृष्टि एक अनादि-अविनाशी स्वचालित नाटक है, जिसमें सभी आत्मायें पार्टधारी हैं, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है; न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है; पार्ट अनुसार जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा; न कोई हमको कुछ दे सकता है और न हमारा कोई कुछ ले सकता है; न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है; हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं। इस विश्व-नाटक में जो कुछ मिला है, वह केवल पार्ट बजाने के लिए मिला है, उसको अपना समझ लेना एक भ्रान्ति है, जिसका आत्मा को पश्चाताप करना ही होता है।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव करो; बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और विश्व-नाटक की यथार्थता को जान साक्षी होकर इसे देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए संगमयुगी ईश्वरीय प्राप्तियों और अनुभूतियों में रमण करते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है। इस विश्व में हर आत्मा देह सहित सर्व साधनो ट्रस्टी मात्र ही है।

जब इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास द्वारा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मन्जिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम-वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

“जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का ज़रा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।”

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),

बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,

ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501

राजस्थान, भारत

**मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607**

फैक्स – 02974-238951

**ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org**